करणी अर भरणी

जितसतरू सरावस्ती नगरी का राज्जा था। ओ भगवान् महावीर का करड़ा भगत था। उसका एक छोरा था, सकंदक अर छोरी थी, पुरंदरयसा।

जितसतरू नैं आपणी छोरी का ब्याह दंडक तै कर दिया। ओ कुम्भकारकटक का राज्जा था। धरम उसनैं भावै-ए ना था। पुरंदरयसा धरम-करम मैं लाग्गी रैहूंदी। दंडक उसका मखौल उड़ाएं जांदा।

जितसतरू की उमर हो ली थी। उसनैं सकंदक आपणा बारस बणा दिया था। सकंदक के बिचार धारमिक थे। ओ दरबार मैं धरम की चरचा भी करवाया करता।

एक बर की बात सै। राज्जा दंडक का पिरोहूत था, पाल्लक। ओ सरावस्ती नगरी देक्खण आया। ओ दरबार देखणा चाहूवै था। आगले दन ओ दरबार मैं पहोंच्या। उसनै ओड़ै देख्या– सकंदक धरम-चरचा करण लाग रूहूया था। ओ तै धरम नैं चाहूवै-ए ना था। उसनै सकंदक तै सासतरारथ करण की कही। सकंदक नैं नरमाई तै मना कर दिया पर ओ घणा जिद्दी था। कोन्यां मान्ना। आक्खर मैं सकंदक नै सासतरारथ की हां भर दी।

सासतरारथ सरू हो ग्या। माड़ी बार ताईं तै दंडक का पिरोहूत पाल्लक सकंदक के सुआलां का जुआब देंदा रहूया पर सकंदक के ग्यान आग्गै उसकी पार कोन्या बसाई। उसनैं नीचा देखणा पड़ूया। ओ सासतरारथ मैं हार

ग्या।

बेसती करा कै पाल्लक आपणे राज मैं उलटा चाल्या गया। आपणे ऊपर उसनैं सरम आण लाग र्‌ही थी। भित्तर-ए-भित्तर उसनैं सकंदक तै इस बेसती का बदला लेण की पक्की सोच ली। टैम लिकड़ता रह्‌या।

एक दन सकंदक आपणे पांच सै ढब्बियां गेल्लां बीसमें तीरथंकर मुनी सुव्रत स्वामी के चरणां मैं पहोंच्या। उसनैं तीरथंकर की बाणी सुणी। भगवान की देसना सुण कै उसका जी बिरागी हो ग्या। बोल्या, "भगवान! मन्नै भी मुनी- धरम की दीक्सा दे द्‌यो। मेरे ढब्बी भी आपके उपदेस सुण कै दीक्सा लेणा चाह्‌वैं सैं।"

भगवान नैं उन तै मुनी-दीक्सा दे दी। थोड़े दन ओड़ै रहें पाच्छै एक दन सकंदक नैं कही, "भगवान ! मैं आपणी बाह्‌ण अर भिणोइये नैं धरम का उपदेस देणा चाहूं सूं।" मुनी सुव्रत स्वामी बोल्ले, "बात तै या भोत बढ़िया सै पर ओड़ै थमनैं कष्ट होवैगा। थारे सारे सात्थी मार दिए जांगे।"

"प्रभो ! हमनैं मरण का डर कोन्या। हम तै आपके विचार चारूं कान्नीं फलाणा चाह्‌वैं सैं" सारे कट्‌ठे हो कै बोल्ले।

भगवान नैं आग्या दे दी। सकंदक आपणे सात्थियां गेल्लां राज्जा दंडक के राज कान्नीं चाल पड़्या।

पाल्लक नैं इसका बेरा पाट्‌या। ओ राज्जी हो ग्या। सोच्ची अक यो मोक्का सैं। ईब मैं आपणी बेसती का बदला ल्यूंगा। घणी वार ताई ओ सोचदा रह्‌या।

सकंदक मुनी अर उस के सात्थी साद्‌धू नगरी के धोरै एक बाग मैं ठैह्‌र गे। रात नैं पाल्लक ओड़ै पहोंच्या। उसनैं खड्‌ढे खोद कै उनमैं

हथियार ल्हको दिए।

फेर ओ राज्जा दंडक तै मिल्लण गया। रात नैं पाल्लक दीख्या तै दंडक चौंक्या। पाल्लक बोल्या, "म्हाराज। भूंडी खबर सैं। सकंदक थारा रस्तेदार सै अर ओ मुनी बण रह्या सै। लेक्यन ओ मुनी का भेस भर कै आपणे पाँच सै मुनी के भेस आले फौजियां गेंल्लां बाग मैं ठैहर रह्या सै। मन्नैं बेरा लाग्या सै अक ओ इस राज नैं हड़पणा चाह्वै सै।

राज्जा बोल्या- अक, न्यूं क्यूकर ?

पाल्लक नैं कह्या- म्हाराज न्यूं-ए सै। या राज-पाट की भूख घणी माड़ी हो सै। इस भूख तैं माणस रस्तेदारी ने भी गोल्या ना करदा। थाम मेरी गेल्लां चाल्लो। सांच-झूठ का बेरा इब्बै लाग ज्यागा।" न्यूं सुण कै राज्जा पाल्लक गेल्लां बाग मैं पहोंच्या। पाल्लक नैं खड्ढे खोद्दे। हथियार राज्जा तै दिखाए अर बोल्या, "देख लिया म्हाराज! आपणी आक्खां तैं देख ल्यो। इस मुनी का भेस भरे होए सकंदक अर इसके सात्थियां तै वा सजा मिलणी चहिए अक ओर दुस्मन भी याद राक्खैं !" राज्जा नैं पाल्लक तै कही, 'रै ! तन्नैं तै म्हारा राज बचा दिया। ना तैं ये दुसट तै हमनैं खतम कर देंदे। ईब जीसी तेरे जी मैं आवै, ऊसी-ए सजा इन तै दे दे।"

दंडक नैं न्यूं कही तै पाल्लक राज्जी हो कै नाच्चण लाग्या।

तड़का होया। पाल्लक नैं थोड़े-से फोज्जी गेल्लां लिए अर बाग चारूं कान्नीं तै घेर लिया। जल्लादां तै हुकम दे दिया, "देक्खो के सो ? इन पखंडियां नैं कोल्हू मैं गेर कै पीस द्यो।"

न्यूं देख कै सारे साधू हैरान रैह्गे। पर किस्से नैं कुछ ना कही।

पाल्लक सकंदक मुनी तै बोल्या, "ईब याद कर ले आपणे धरम नैं। याद सै- तन्नैं मेरी बेसती करी थी। ईब भोग्गो आपणी करणी का फल।"

सकंदक मुनी होट्ठां भित्तर हांसे। उनकै याद आई अक भगवान नैं ठीक-ए कही थी- ओड़ै तम सारे के सारे मारे जा सको सो। वे बोल्ले- "पाल्लक ! तू घमण्ड मैं पड्या सै। याद राखिए अक भूंडे करमां का नतीजा भोत भूंडा लिकड्या करै सै।"

पाल्लक पै उनकी बात्तां का कोए असर ना होया।

साद्धुआं नैं देख लिया- ईब टैम आग्या सै। उनत्ती भगवान् याद करे अर आपणे नेमां बरतां में होई भूल-चूक की माफ्फी मांगी। फेर, गरु तै आग्या ले कै संतारा (सारी-ए उमर का खाणा-पीणा छोड्य) कै, भगवान् के ध्यान मैं बेठ ग्ये।

जल्लादां नैं मुनी कोल्हू मैं पेरने सरू कर दिए। खून्नां की धार चाल पड़ी। धरती लाल होण लाग्गी। दरदनाक महौल बण ग्या। एक-एक करदे-करदे चार सौ न्यनाणुवैं साद्धू कोल्हू मैं पीड़ दिये।

आख्यर मैं सकंदक मुनी का एक चेल्ला बच ग्या था। ओ बाल़क मुनी था। उसकी उमर देख कै सकंदक मुनी बोल्ले, "पाल्लक! इतणे बेकसूर साद्धू मार कै तन्नैं ठीक नहीं कर्या। मैं कहूं सूं अक तू इसनैं छोड़ कै पैल्हां मनै पीड़ दे।

पाल्लक नैं सोच्ची– इस चेल्ले तै सकंदक नैं घणा प्यार सै। ओ बोल्या, "बोल-बाला खड्या रैह्। तेरी आंख्या के स्यांमीं-ए यो मरैगा। तेरी बारी भी आण आल़ी सै।"

जिब्बै-ए जल्लादां नैं ओ बालक मुनी भी कोल्हू मैं फैंक दिया।

सकंदक मुनी तै ना रह्या गया। वे बोल्ले- "रै पापी! तेरा नास होण आला सै। मैं सारे सैह्र नै जला कै राख कर द्यूंगा।"

पाल्लक नै सकंदक की बात कोन्यां सुणी। अर, हुकम दे दिया अक इसनैं भी कोल्हू मैं फैंक द्यो। सकंदक मुनी भी कोल्हू में पीड़ दिये गये।

हर्‌या-भर्‌या बाग खून मैं सन ग्या। चील अर गीध मंडराण लाग्गे। एक गीध नैं सकंदक मुनी का खून मैं भर्‌या रजोहरण (ओग्घा) मांस का टुकड़ा सिमझ कै ठाया अर आपणी चोंच में दाब लिया। ओ उड़ कै राजमैह्ल पै जा बेठ्या। ओ ओघा मैह्ल के चोंक मैं ढै पड़्या। यो देख कै पुरंदरयसा कै खटक लाग गी। बूज्झ्या तै सारी बात का बेरा लाग्या। या दरदनाक बात सुण कै वा चिल्ली मार कै ढै पड़ी। उसका जी संसार कै रिस्ते-नात्तां तै ऊब ग्या। उसनैं साध्वी दीक्सा ले ली।

थोड़ा टैम बीत्या। संकल्प के मुताबक सकंदक मुनी अग्नीकुवार देवता बणे। आपणे सात्थियां गेल्लां भयानक रूप बणा कै बाग के ऊपर मंडराण लाग्गे। अकासबाणी करी, "पाल्लक ! हुस्यार हो ले। ईब टैम आ ग्या सै। आपणे पाप का फल भोग्गण नैं त्यार हो ज्या।"

न्यूं सुणतें-ए अकास तै आग बरसण लाग्गी। माड़ी वार मैं-ए सारा सैह्र भसम हो ग्या। राज्जा, उसका घर-कुणबा, पाल्लक अर उसके सारे सात्थी जल कै मर गे।

न्यूं सुणी सै अक कई साल ताईं ओड़ै आग बलती रही। उस जमीन नैं ईब "दंडकारण्य" कह्या करैं सैं। ❑❑

मेघ कुवार मुनी

मगध देस मैं राजगीर नाम का एक सहर था। ओड़ै राज्जा सरेणिक राज कर्‌या करदा। उसकी एक राणी का नां था धारणी अर दूसरी का था नंदा। नंदा कै एक छोरा होया। उसका नां था- अभै कुवार। धारणी कै कोए बालक ना था। उसनै इसकी करड़ी फिकर रह्‌या करती। राज्जा नै वा घणी-ए समझाई पर उसकी सोच कोन्यां मिट्‌टी।

एक बर रात नैं धारणी नैं सुपने मैं एक धौल़ा हाथी दीख्या। उसनैं यो सुपना राज्जा तै बताया। राज्जा नैं पंडतां तै सुपने का मतलब बूझ्या। पंडत बोल्ले, "म्हाराज! राणी नै भोत सुथरा सुपना देख्या सै। उसकै एक ईसा छोरा होवैगा जो घणा-ए नाम कमावैगा।"

पंडतां की या बात सारे सहर मैं हवा की तरियां फैलगी। जन्ता सुण-सुण कै घणी-ए राज्जी होई। तीन म्हीनें बीत ग्ये। एक बै राणी का ईसा जी कर्‌या अक वा अकास मैं काल़े-काल़े बाद्‌दल़ देक्खै। हाथी पै चढ कै वैभार गरी नाम के पहाड़ पै हांडै। पर राणी के जी की कूक्कर पूरी हो सकै थी। बारिस का टैम तै लिकड़ लिया था। फेर काल़े बाद्‌दल़ अकास मैं कित तै आंदे? राणी फेर दुखी-दुखी-सी रहण लाग्गी।

राज्जा नैं बूज्झी तै राणी नैं आपणे जी की बंताई। राज्जा भी इसमैं के कर सकै था! या सिमस्या तै उसके बस की थी नहीं। ओ भी बोल-बाला रहण लाग्या। राज्जा के छोरे अर राजगीर के मंतरी अभै कुवार नै राज्जा तै बूज्झी अक बात के सै? राज्जा नै राणी के जी की बात

बता दी। अभै-कुवार बोल्या अक "पिताजी... कती फिकर ना करो। वा मेरी मां सै। मैं राणी के जी की बात साच्ची कर कै दिखाऊंगा।" न्यूं कह कै ओ पोसा करण की जंगा मैं चाल्या गया। खाणा-पीणा छोड कै तीन दन की तिपस्या करण लाग्या। दो दन बीत गे।

तीसरे दन देवलोक मैं एक देव बैठ्या था। उसका नां था- रिद्धी कुमार। उसनै अभैकुवार की तिपस्या का बेरा पाट्या। ओ उसके धोरै आया। उस तै बर मांगण की कही। अभैकुवार नै आपणी राणी मां के जी की बात साच्ची करण खातर बिनती करी। देव 'तथास्तु' कह कै चाल्या गया। बारिस होण का ढंग दीखण लाग्या। अकास मैं काले-काले बाद्दल आ ग्ये। बाद्दलां नै देख कै राणी घणी-ए राज्जी होई। हाथी पै बैठ कै वा वैभार गरी के पहाड़ पै हांडण गई। उस के जी की बात साच्ची होई।

आच्छे म्हूरत मैं राणी कै छोरा होया। उसका नां धर दिया– मेघ कुवार। जुकर एक-एक दिन चंदरमा की कला बढ्या करै सै, न्यूं-ए ओ भी बड्ढण लाग्या। राज्जा नैं ओ पड्ढण खातर अचार्य जी धोरै घाल दिया। थोड़े-ए दिनां मैं उस नैं घणी-ए बिद्या सीख ली। ओ ओड़े तै बिदवान बण कै घरां उलटा आ लिया। राज्जा नै सुथरी अर काबल छोरी गेलां मेघकुवार का ब्याह कर दिया।

एक बै बिहार करदे-करदे म्हावीर भगवान उसे सहर के बाह्र आ ग्ये। लोग उनकी बाणी सुणन खातर तरसैं थे। दुनिया उनकी बाणी सुणन आण लाग गी। लोग उनके बखाण की तारीफ सारे सहर मैं करण लाग गे। चुगरदे कै या-ए बात चाल पड़ी। चालते-चालते या बात राज्जा

के कान्नां मैं भी पड़ी। ओ भी आपणे घर-कुणबे गेलां बाणी-सुणन पहौंच ग्या। सबनै जिसी बात सुणी थी, उस तै भी बत्ती बात पाई। सारे के सारे म्हावीर भगवान नै मान्नण लाग गे। सब तै घणा असर पड़्या राज्जा के छोरे मेघ कुवार पै। बखाण जिब पूरा हो लिया तै ओ भगवान के चरणां मैं जा पहौंच्या अर दीक्सा दे कै साद्धू बणान खातर बिनती करण लाग्या। भगवान बोल्ले– पहलां अपणे मां-बाप तै बूझ, दीक्सा की अज्ञा ले ले, जिब्बै दीक्सा ले सकै सै।

मेघ कुवार महलां मैं उलटा आया। राज्जा-राणी आगै आपणे मन की बात कही। राज्जा नैं ओ घणा-ए समझाया। उसकी मां तै रोण लाग गी। आपणे भीतर की सारी मामता उसनै छोरे पै बरसा दी। फेर भी मेघकुवार आपणे फैसले तै जौ भर भी कोन्यां डिग्या। मां-बाप नैं जिब देख लिया अक छोरे पै तै उनकी बातां का कोए असर ना पड़ै तै वे कहण लाग्गे, "बेट्टा! हमनैं जो कुछ समझाणा-समझूणा था ओ तै हमनैं सारा कर लिया। तू चाहे मान चाहे मतन्या मान। म्हारा ईब एक अरमान सै। हम न्यूं चाह्वै सैं अक दीक्सा लेण तै पहलां तू एक बर राज-सिंघासन पै बैठ ज्या। म्हारा यो आखरी अरमान सै। बस! तू इस नैं पूरा कर दे। फेर जुकर तेरा जी करै न्यूं-ए कर लिए।"

मेघ कुवार नैं उनकी या बात मान ली। उसका राज तिलक हो ग्या। एक दिन खातर ओ गद्दी पै बैठ्या। आगले दिन ओ राज-पाट छोड कै जाण लाग्या। चालते-चालते उसकी मां बोल्ली अक, "दखे! तू साद्धू बणन खातर तै जा सै पर पूरे संजम तै जिनगी बिताइये। खूब ऊंचा साद्धू बणिये। किस्से भी तरियां की कोए कमजोरी आपणे भीतर मतन्या आण

दिए।" राज्जा नैं भी उस तै न्यूं हे कही।

मेघकुवार म्हावीर भगवान के चरणां मैं पहौंच ग्या। भगवान नैं उस तै दीक्सा देण की किरपा कर दी। इब ओ मुनी मेघ कुवार बण गे।

मेघ मुनी सारे मुनियां मैं सब तै छोट्टे थे। रात होई तै सोण खातर उन नै सब तै पाछै देहलियां धोरै जंगा मिल्ली। रात नै जिब भी कोए मुनी ओड़े तै आता-जाता तै मेघ मुनी नै आपणे पां सकोड़ने पड़ते। एकाधी बर दूसरां के पां उनकै लाग भी जाते। इस बात तै वे दुखी हो लिए। सारी रात नींद कोन्यां आई। साद्धू बणन के अपने तावलेपण पै सारी रात झीखते से रहे। माड़ी-माड़ी वार मैं मां-बाप के लाड्डां की याद आण लाग गी। न्यूं सोचते रहे अक मन्नैं घणी-ए भूंडी करी। जै मां-बाप की बात मान लेंदा तै यो दुक्ख थोड़ा-ए देखणा पड़ता। मैं राज्जा का छोरा अर ये साद्धू मन्नैं आते-जाते ठोकर मारैं। या भी कोए जिनगी सै? इस तै तै आच्छा मैं पहल्यां-ए ना था!

आपणे घमण्ड मैं उसनैं फैसला कर लिया अक मुनी का बाणा छोड कै मां-बाप के धोरै जाऊंगा। वे मन्नैं घर मैं उल्टा आया देख कै घणे-ए राज्जी होवैंगे। न्यूं-ए सोचते-सोचते तड़का हो ग्या। उसनैं सोची अक भगवान आगै कह कै अर फेर जाणा चहिए।

वे भगवान के चरणां मैं पहौंच गे। सारी बता दी। भगवान समझाण लाग्गे, "इसमैं दुखी होण की कुण-सी बात सै? तम आपणे-आप नैं भूल गे। यो तै कुछ भी दुक्ख कोन्या। पाछले जनमां मैं तै तमनै घणा कसट ठाया था।" या बात सुण कै मेघ मुनी नै भगवान तै आपणे पाछले जनमां की बात सुणान की बेनती करी।

म्हावीर भगवान बोल्ले- "थारे तीसरे जनम का जिकर सै। तम हाथियां के परधान थे। एक बर गरमियां के दिन थे। जंगल़ के जीव-जन्तु गरमी के मारे घणे-ए दुखी हो रे थे। पाणी टोह्ण खातर और जानवरां गेल्लां तम भी भाजे फिरो थे। फेर तम एक जोहड़ नै देख कै उस मैं पाणी पीण नै बड़गे। ओड़ै घणी-ए दलदल थी। तम उस जोहड़ की दलदल मैं फंस गे। चाणचक एक हाथी ओर ओड़ैं पहौंच ग्या। उसकी अर थारी दुसमनाई थी। उसनैं आपणे पैन्ने दांतां तै थारा सारा सरीर ओड़ै बींध दिया। तम नै बोल-बाले रह कै सारा कष्ट ओट लिया। आखिर मैं थारे पराण लिकड़ गे।"

"दूसरे जनम की कथा भी सुणाओ भगवान!" मेघ मुनी नै बेनती करी।

भगवान सुणान लाग्गे, "दूसरे जनम मैं भी तम हाथी बणे। थारे यारे--प्यारां नै फेर तम आपणे परधान बणा लिए। एक बर जंगल़ मैं आग लाग गी। सारे जीव-जंतुआं मैं भगदड़ माच गी। जान बचाण खातर कोए किंघे नैं भाजता, कोए किंघे नैं। वा आग घणी ना थी। तौल़ी-ए बुझ गी। पर या देख कै तमनैं घणा डर लाग्या। तमनैं आपणी अर आपणी गेल रैहण आल़ां की जान बचाण खातर एक गोल़ मदान बणाया, जिस मैं घास-फूस का एक तुणका भी ना था। पेड़-पाड़ ओड़े तैं सारे पाड़ कै हटा दिए थे। मदान कती साफ लिकड़ आया था।

गरमी फेर घणी हो गी। ईब कै जंगल़ मैं घणी खतरनाक आग लाग्गी। तम आपणे साथियां नैं ले कै उस मदान मैं आ गे। थारी जान बचती देख कै आपणी जान बचाण खातर जंगल़ के छोट्टे-बड्डे सारे-ए जीव-जंतु उस मदान मैं कट्ठे होण लाग गे। तमनैं सब तैं जंगा दे दी।

मदान ठाड्डा भर ग्या। जिब्बै-ए एक खरगोस ओड़ै आया। उसनै कितै भी जंगा कोन्यां पाई। ओ जंगा टोहूता फिरै था।

उसे टैम तमनैं खाज करण खातर आपणा पां ठाया। खरगोस नैं जंगा दीखी। ओ ओड़े-ए बैठ ग्या। तमनै पां धरणा चाह्या पर खरगोस की जान पै तरस खा कै जमीन पै पां धर्‌या कोन्या। तम नैं कितणा कसट ठाया था उस टैम? तीन दिन ताईं आग बलती रही। फेर बुझी। सारे जीव-जंतु ओड़े तै जाण लाग्गे। ओ खरगोस भी चाल्या गया। फेर जब तम नैं धरती पै पां टेकणा चाह्या तै टिक्या-ए कोन्या। ऊंचै पै धरे-धरे पां कती सुन्न हो लिया था। तम नैं चालण की कोसिस करी पर पां तै कती सुन्न था। तम धरती पै धड़ाम दणे-सी ढै पड़े अर मर गे। तम नैं खरगोस पै दया करी थी इसका फल तमनैं मिल्या अर राज्जा सरेणिक के घर मैं जनम लिया। हाथी की जून मैं दूसरे खातर इतणा दुक्ख ठा कै तै तम आदमी बणे। ईब तम माड़े हे कसट तै-ए दुखी हो लिए?"

भगवान की बाणी सुण कै मेघ मुनी नैं पाछले जनमां का ग्यान हो ग्या। सारी बात उसकी सिमझ मैं आ गी। भगवान तै वे माफी मांगण लाग्गे अर कसम खा ली अक ईब मैं सारी ज्यंदगी दूसरां के भले मैं अर दूसरां की सेवा मैं-ए ला द्यूंगा।

कई साल मेघ मुनी नैं करड़ी तिपस्या करी। आपणा भी भला कर्‌या अर औरां का भी भला कर्‌या। घणे-ए लोग्गां तै सचाई की राही दिखाई। आखिर मैं तिपस्या करते होए सरीर छोड्‌या अर देवलोक मैं जा कै जनम लिया।

❑❑